

# बृहस्पति अपने कई चंद्रमा निगल चुका है

ताज़ा अनुसंधान से संकेत मिला है कि सुदूर अतीत में बृहस्पति के कई चंद्रमा थे और वर्तमान में उनमें से मात्र चार बचे हैं। कोलेरेडो के साउथवेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट के रॉबिन कैनप का निष्कर्ष है कि किसी समय कम-से-कम 20 चंद्रमा बृहस्पति का चक्कर काटते थे।

फिलहाल बृहस्पति के चार चंद्रमा हैं। ऐतिहासिक रूप से देखें तो ये चार बहुत महत्वपूर्ण रहे हैं। गैलीलियो ने 400 साल पहले इनकी खोज की थी और बताया था कि ये बृहस्पति का चक्कर काटते हैं। इस खोज से इस बात का स्पष्ट प्रमाण मिल गया था कि ब्रह्मांड के सारे पिण्ड पृथ्वी की परिक्रमा नहीं करते हैं। सौर मंडल के सूर्य केंद्रित मॉडल में इस अवलोकन का बहुत महत्व है। मगर किसी ने यह नहीं सोचा था कि ये चार तो मात्र बचे-खुचे चंद्रमा अर्थात् उपग्रह हैं, वास्तव में बृहस्पति के दसियों चंद्रमा थे।

कैनप का कहना है कि खगोल शास्त्रियों को इस बात का आभास तो काफी समय से था कि जिस ढंग से बृहस्पति व उसके उपग्रहों का निर्माण हुआ है उसमें कहीं कोई पहेली अवश्य है। इनके निर्माण के जो भी मॉडल्स विकसित किए गए थे उनसे प्रतीत होता है कि बृहस्पति के आसपास मलबे की जो तश्तरी थी उसमें काफी ज़्यादा पदार्थ था। इस

पदार्थ की मात्रा स्वयं बृहस्पति की मात्रा का 10-20 प्रतिशत तक होगी। इसी पदार्थ से उपग्रह बने हैं। मगर जो चंद्रमा हम आज देखते हैं, उन्हें बनाने के लिए तो मात्र 2 प्रतिशत पदार्थ काफी होता। तो शेष पदार्थ गया कहां?

कैनप और उनके साथियों ने अनुमान लगाया है कि यह अतिरिक्त पदार्थ बहुत सारे चंद्रमा बनाने में काम आया होगा। यह

घटना उस समय की होगी जब मलबा मौजूद था और सौर मंडल से पदार्थ का प्रवाह जारी थी। इन विकसित होते चंद्रमाओं और सौर मंडल से प्रवाहित होते पदार्थ के बीच परस्पर क्रिया का असर रहा होगा कि ये शुरुआती चंद्रमा घूमते-घूमते बृहस्पति में विलीन हो गए होंगे। जैसे ही चंद्रमा का एक सेट विलीन हुआ होगा, एक नया सेट बनने लगा होगा। कैनप के मुताबिक उपग्रहों की ऐसी पांच पीढ़ियां रही होंगी। उनका यह भी मत है कि आज जो चंद्रमा दिखते हैं वे तब बने होंगे जब सौर मंडल से पदार्थों का प्रवाह थमने लगा था। (स्रोत फीचर्स)

